कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here




1. 19वीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों की बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे ?

उत्तर : विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में मानव-श्रम की कोई कमी नहीं थी।

- गरीब किसान और बेकार लोग कामकाज की तलाश में बड़ी संख्या में शहरों को जाते थे।
- श्रमिकों की बहुतायत के कारण वेतन गिर गए थे।
- इसलिए उद्योगपतियों को न तो श्रमिकों की कोई कमी थी और न ही उनके वेतन के मद में कोई भारी लागत लगती थी।
- उद्योगपतियों को ऐसी मशीनों में भी कोई दिलचस्पी नहीं थी जिसके कारण उन्हें मजदूरों से छुटकारा मिल जाए और उन मशीनों के कारण बहुत ज्यादा खर्चा आने वाला हो।

मौसमी आधार पर मजदूरों की माँग :-

- बहुत सारे उद्योगों में मजदूरों की माँग मौसमी आधार पर घटती बढ़ती रहती थी।
- गैसघरों और शराबखानों में जाड़ों के दौरान खासा काम रहता था। इन दौरान उन्हें ज्यादा मजदूरों की जरूरत होती थी।
- क्रिसमस के समय बुक-बाइंडरों और प्रिंटरों को भी दिसम्बर से पहले अतिरिक्त मजदूरों की दरकार रहती थी।
- बंदरगाहों पर जहाजों की मरम्मत और साफ-सफाई व सजावट का काम भी जाड़ों में ही किया जाता था।
- जिन उद्योगों में मौसम के साथ उत्पादन घटता-बढ़ता रहता था वहाँ उद्योगपति मशीनों की बजाय मजदूरों को ही काम पर रखना पसंद करते थे।

इनसानी निपुणता :-

- बहुत सारे उत्पाद ऐसे थे जो केवल हाथ से ही तैयार किये जाते थे।
- मशीनों से तो एक जैसे तथा तय-किस्म के उत्पाद ही बड़ी संख्या में बनाये जा सकते थे।
- लेकिन बाजार में अकसर बारीक डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी।
- उदाहरण के लिए :- 19वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में 500 तरह के हथोड़े तथा 45 तरह की कुल्हाडियाँ बनाई जा रही थीं।
- इन्हें बनाने के लिए मशीनों की नहीं बल्कि इनसानी निपुणता की जरूरत थी।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग जैसे कुलीन और पूँजीपति वर्ग, हाथों से बनी चीजों को ही तरजीह देते थे।
- हाथों से बनी चीजों को परिष्कार और सुरूचि का प्रतीक माना जाता था।
- उनकी फिनिशिंग भी अच्छी होती थी।
- उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिजाइन अच्छा होता था।
- मशीनों से बनने वाले उत्पादों को तो उपनिवेशों में निर्यात कर दिया जाता था।

**2. ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या किया?**

उत्तर :

- 1760 के दशक तक ब्रिटिश कपड़ा उद्योग फैलना शुरू नहीं हुआ था तथा यूरोप में भारतीय कपड़ों की भारी माँग थी।
- 1760 और 1770 के दशकों में बंगाल और कर्नाटक में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी को निर्यात के लिए लगातार कपड़े की सप्लाई नहीं मिल पाती थी।
- बुने हुए कपड़े को हासिल करने के लिए फ्रांसीसी, डच, पुर्तगालियों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी भी होड़ में रहते थे।
- लेकिन एक बार ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक सत्ता स्थापित हो जाने के बाद कंपनी ने व्यापार पर अपना एकाधिकार करना प्रारम्भ किया।
- फलस्वरूप अब कंपनी ने प्रबंधन एवं नियंत्रण व्यवस्था लागू की जिसमें -
  (i) प्रतिस्पर्धा खत्म करना
  (ii) लागतों पर अंकुश रखना
  (iii) कपास एवं रेशम से बनी चीजों की नियमित आपूर्ति करने के लिए व्यवस्था की गई।
- इस काम को कई चरणों में किया गया।

प्रथम चरण :-

- कंपनी ने कपड़ा व्यापार में सक्रिय व्यापारियों और दलालों को खत्म करने की कोशिश की।
- बुनकरों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखने का प्रयास किया गया।
- कंपनी ने वेतन भोगी कर्मचारी गुमाश्ता तैनात कर दिए

जिनका कार्य :-

(i) बुनकरों पर निगरानी रखना।
(ii) माल इकट्ठा करना।
(iii) कपड़ों की गुणवत्ता जाँचना था।

दूसरा चरण :-

- कंपनी को माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य खरीदारों को माल बेचने पर पाबंदी लगा दी गई।
- इसके लिए उनको पेशगी रकम दी जाती थी।
- एक बार काम का ऑर्डर मिलने पर बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए कर्जा दे दिया जाता था।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- जो कर्जा लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा 'गुमाश्ता' को ही देना पड़ता था। किसी और व्यापारी को नही बेच सकते थे।
- जैसे-जैसे कर्जे मिलते गए और महीन कपड़े की माँग बढ़ने लगी, ज्यादा कमाई की आस में बुनकर पेशगी स्वीकार करने लगे।
- बहुत सारे बुनकरों के पास जमीन भी थी जिस पर वे खेती करके अपने परिवार को पालते थे।
- अब वे इस जमीन को भाड़े पर देकर पूरा समय बुनकरी में लगाने लगे।
- अब पूरा परिवार यही काम करने लगा।
- बच्चे, बूढ़े व औरतें, सभी कुछ न कुछ काम करते थे।
- इससे उत्पादन बढ़ गया था।
- आपूर्ति भी नियमित हो गयी थी।

**3. कल्पना कीजिए कि आपको ब्रिटेन तथा कपास के इतिहास के बारे में विश्वकोष के लिए लेख लिखने को कहा गया है। इस अध्याय में दी गई जानकारियों के आधार पर अपना लेख लिखिए।**

उत्तर : ब्रिटेन तथा कपास का इतिहास

- इंग्लैंड में सबसे पहले 1730 के दशक में कारखाने खुले लेकिन उनकी संख्या में तेजी से इजाफा 18वीं सदी के आखिर में हुआ।
- कपास (कॉटन) नये युग का पहला प्रतीक थी।
- 19वीं सदी के आखिर में कपास के उत्पादन में भारी बढ़ोत्तरी हुई।
- 1760 में ब्रिटेन 25 लाख पौंड कच्चे कपास का आयात करता था।
- 1787 में यह आयात बढ़कर 220 लाख पौंड तक पहुँच गया था।
- क्योंकि वहाँ कपास-उद्योग की जरूरतें बढ़ गई थीं।
- यह इजाफा उत्पादन की प्रक्रिया में बहुत सारे बदलावों का परिणाम था।

उत्पादन प्रक्रिया में बदलाव :-

- 18वीं सदी में कई ऐसे अविष्कार हुए जिन्होंने उत्पादन प्रक्रिया के हर चरण की कुशलता बढ़ा दी।
- प्रति मजदूर उत्पादन बढ़ गया और पहले से ज्यादा मजबूत धागों व रेशों का उत्पादन होने लगा।
- इसके बाद रिचर्ड-आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा सामने रखी।
- अभी तक कपड़ा उत्पादन पूरे देहात में फैला हुआ था तथा यह काम लोग अपने अपने घर पर करते थे।
- लेकिन अब नई मँहगी मशीनें कारखानों में स्थापित कर उत्पादन की सारी प्रक्रियाऐं एक छत के नीचे ओर एक मालिक के हाथों में आ गई थीं।
- अब उत्पादन प्रक्रिया पर निगरानी, गुणवत्ता पर ध्यान रखना और मजदूरों पर नजर रखना संभव हो गया था।
- जब तक उत्पादन गाँवों में हो रहा था तब तक ये सारे काम संभव नहीं थे।

कारखाने :-

- 19वीं सदी की शुरूआत में इंग्लैंड में कारखाने भूदृश्य का अभिन्न अंग बन गये थे।
- ये नये कारखाने इतने विशाल होते थे और नई-प्रौद्योगिकी की ताकत इनमें इतनी जादुई दिखाई देती थी

Download Mission Gyan App



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

कि उस समय के लोगों को आँखें चौंधिया जाती थी।

- लोगों का ध्यान कारखानों पर टिका रह जाता था।
- वे इस बात का मानो भूल ही जाते थे कि थोड़ी देर पहले ही उनकी आँखों से ओझल गलियों और वर्कशाप्स में अभी भी उत्पादन चालू है।
- सूती उद्योग और कपड़ा उद्योग ब्रिटेन के सबसे ज्यादा फलते-फूलते उद्योग बन गये थे।
- तेजी से बढ़ता हुआ कपास उद्योग 1840 के दशक तक औद्योगीकरण के पहले चरण में सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था।

**4. पहले विश्व युद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन क्यों बढ़ा?**

उत्तर : प्रथम विश्व युद्ध तक भारत का औद्योगिक विकास बहुत धीमा था।

- प्रथम विश्व युद्ध ने एक बिल्कुल नयी स्थिति पैदा कर दी थी।
- ब्रिटिश कारखाने तो सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए युद्ध संबंधी सामग्री के उत्पादन में व्यस्त थे।
- फलस्वरूप भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया।
- भारत में बने माल को रातों रात एक विशाल देशी बाजार मिल गया।
- युद्ध लंबा खिंचा तो भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए
  (i) जूट की बोरियाँ
  (ii) फौजियों की वर्दी के कपड़े
  (iii) टैंट
  (iv) चमड़े के जूते
  (v) घोड़े व खच्चर की जीन
  तथा बहुत सारे अन्य सामान बनने लगे।
- नये कारखाने लगाये गये।
- पुराने कारखाने भी कई पारियों में चलने लगे।
- बहुत सारे नये मजदूरों को काम पर रखा गया और हरेक को पहले से ज्यादा समय तक काम करना पड़ता था।
- युद्ध के दौरान औद्योगिक उत्पादन तेजी से बढ़ा।
  युद्ध के बाद भारतीय बाजार में मैनचेस्टर की पहले वाली हैसियत नहीं हो पाई।
- आधुनिकीकरण न कर पाने और अमेरिका, जर्मनी व जापान के मुकाबले कमजोर पड़ जाने के कारण ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी।
- कपास का उत्पादन बहुत कम हो गया था।
- ब्रिटेन से होने वाले सूती कपड़े के निर्यात में जबरदस्त गिरावट आई।
- भारत में विदेशी उत्पादों को हटाकर स्थानीय उद्योगपतियों ने घरेलू बाजारों पर कब्जा कर लिया।
- धीरे-धीरे स्थानीय उद्योगपति मजबूत होते चले गये।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here